Part-III, Paper-V, Sec-A, Unit-1.

Contribution of Humboldt

S. Mazumdar

भूगोल का विकास यूनान एवं रोमनकालीन विद्वानों के निरन्तर विकसित और व्यवस्थित चिंतन से प्रारंभ हुआ था एवं उत्तर मध्ययुग की साहसिक यात्राओं और नए क्षेत्रों के खोज द्वारा उनका प्रस्फुटन हुआ, लेकिन भूगोल को विकसित वृक्ष का रूप देने का श्रेय 18वीं तथा 19वीं सदी के विद्वानों को ही जाता है, जिसमें अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट भूगोल के आकाश में जगमगाता एक सितारा है, इनका अवदान अविस्मरणीय है,

जीवनी :- हम्बोल्ट का जन्म 1769 में बर्लिन के शाही परिवार में हुई, बचपन से ही उनकी रूची भ्रमण और ज्ञानार्जन की ओर था, 18 वर्ष तक इनकी शिक्षा घर पर माँ की देखरेख में एवं उसके बाद उच्च शिक्षा के लिए फ्रैंकफर्ट तथा फ्रैबर्ग विश्वविद्यालय में प्रवेश किया, यहाँ उन्होंने भू-विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा खनिज विज्ञान से सम्बन्धित शिक्षा ग्रहण की, फ्रैबर्ग विश्वविद्यालय में वे प्रसिद्ध भूगर्भवेत्ता "वेगनर" के शिष्य रहे।

अध्ययन समाप्ति के बाद इनकी नियुक्ति 1791 में सरकारी खनिज विभाग में हुई तथा उन्होंने द० जर्मनी की यात्रा की, 1791 में माँ की मृत्यू के बाद इन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे अपने सम्पत्ति के बल पर काफी यात्राएँ की, वे स्पेन के लाकोरूना से यात्रा शुरू किए, वे द० अमेरिका, क्यूबा, मैक्सिको, ओरिनोको तथा उ० एण्डीज की भी यात्रा के, यात्रा के बाद वे फ्रांस लौटे और २२ वर्ष पेरिस में ही रहे, जहाँ वे कठोर परिश्रम और काफी धन खर्च करके नई दुनिया से संबंधित अनुभवों का प्रकाशन कराया, यह अनुभव भूगोल, भूविज्ञान, वनस्पति विज्ञान और मौसम विज्ञान के लिए अमूल्य निधि है।

30 वर्षों के बाद रिटर के प्रयास और जर्मनी के शासक के निमंत्रण पर 1827 ई० में वे पुनः जर्मनी लौट आए, जहाँ दोनों विद्वानों के बीच

सम्पर्क होने पर भौगोलिक चिन्तन और दर्शन में विकास होता गया। 1829 में रूसी सरकार के निमंत्रण पर वे रूस की यात्रा की। वहाँ उन्होंने यूराल, प० साईबेरिया, तथा अल्टाई पर्वत प्रदेश की यात्रा की। इस अनुभवों को मध्य एशिया के भूगर्भशास्त्र, उच्चावच तथा जलवायु ग्रन्थ प्रकाशित कराया। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम 30 वर्ष अपने महान ग्रंथ "COSMOSS" की रचना में लगाया। इनकी मृत्यु 1859 में हुआ। उस दिन सारे जर्मनी में राजकीय शोक मनाया गया।

रचनाएँ :- हम्बोल्ट भूगोल के अतिरिक्त भू विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, खनीज विज्ञान और राजनीति विज्ञान में भी अपनी विद्वतापूर्ण रचनाएँ लिखी, उनकी मुख्य रचनाएँ हैं :-

a) राइनलैंड वेसाल्ट पर शोधग्रन्थ।
b) प्रकृति दिग्दर्शन।
c) दोनों गोलार्द्धों के चट्टानों की स्थिति पर मूलेख,
d) यूराल तथा प० साईबेरिया के खनिज सम्पदा पर लेख,
e) भूमध्यरेखीय प्रदेशों की यात्रा वृत्तांत।
f) नई दुनिया के स्पैनिश उपनिवेशों पर राजनैतिक लेख,
g) COSMOS पाँच खंडो में प्रकाशन

हम्बोल्ट की भूगोल को देन :- उन्होंने भूगोल की परिभाषा देने, उद्देश्य निर्धारण करने के साथ ही ब्रह्माण्ड वर्णन, भौतिक भूगोल, वनस्पति विज्ञान, ऋतु विज्ञान जलवायु विज्ञान क्षेत्रों में सराहनीय योगदान दिया। उन्होंने जैविक और अजैविक घटनाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है। उन्होंने शोध हेतु सावधानी पूर्वक प्रेक्षण, आनुभविक आगमनिक विधि, तुलनात्मक विधि, शुद्धता मानचित्रण विधि आदि पर विशेष बल दिया। उन्होंने ही सर्वप्रथम समताप रेखा बनाने एवं उन्हें विश्व मानचित्र में प्रयुक्त करने का सफल एवं व्यावहारिक स्वरूप को ज्ञात किया।

हम्बोल्ट ने वनस्पति भूगोल को पहली

तार वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान की, उन्होंने व्यक्तिगत पौधों के लक्षणों को बताकर, उन्हें समूहों में बाटाँ। वे सैकड़ों पत्तों को सावधानीपूर्व अध्ययन किया।

उन्होंने मानव तथा उसके द्वारा निर्मित तत्वों और उसके व्यवहार का अध्ययन प्रकृति के अंग के रूप में किया, उनका मानना था मानव प्राकृतिक क्रियाओं और घटनाओं से प्रभावित रहता है, उन्होंने मनुष्य को कभी भी प्राकृतिक निर्धारक के रूप में नहीं माना क्योंकि मनुष्य वैसे क्षेत्रों में काम करता है जहाँ प्रकृति मनुष्य से ज्यादा प्रभावकारी होता है, मानव जाति एवं प्रजाति का वर्णन प्रकृति के अंग के रूप में किया, वास्तव में वे एक नियतीवादी विचारक थे, उनके अनुसार स्वच्छ आकाश रहने के कारण ही अरब निवासी नक्षत्र विद्या या ज्योतिष विद्या में निपुणता हासिल की।

विधितंत्र एवं शोध विधियाँ :→ हम्बोल्ट एक साथ अनेक विज्ञानों के विद्वान थे, वे एक अनोखा प्रतिभावान समालोचक, निरीक्षणकर्ता एवं अनुभव द्वारा संभावित परिणाम, पूर्वानुमान लगानेवाला व्यक्ति थे, उन्होंने आगमनिक विधि को विशेष महत्व दिया, वे प्रेक्षण जाँच एवं सम्पुष्टि को शोध के लिए आवश्यक माना, उन्होंने शोध के लिए निम्न विधियों पर बल दिया :—

A. सावधानीपूर्वक प्रेक्षण B. आनुभविक आगमनिकविधि
C. तुलनात्मक विधि D. रूढ़ता
E. मानचित्रकीय विधियाँ

संकल्पनाएँ :— हम्बोल्ट महोदय ने अपने COSMOS ग्रंथ के प्रथम खंड में सात संकल्पनाओं का विकास किया है जो भूगोल को समझने का आधार है।

1) भूतल मानव निवास के रूप में।
2) भूगोल क्षेत्र वितरण विज्ञान के रूप में।
3) सामान्य भूगोल ही भौतिक भूगोल है।

4) भूगोल संबंधों का विज्ञान है,
5) विश्व घटनाओं की विशदरूपता एवं उनकी जटिल संयुक्तता,
6) भूगोल में घटनाओं की विविधरूपता,
7) प्रकृति की एकता।

उपसंहार :— हम्बोल्ट शिक्षण काल से ही काण्ट के चिन्तन से प्रभावित थे, इसके अलावा वारेनियस जार्ज फॉस्टर तथा उनके समकालिक रिटर के चिन्तन से भी वे गहरे रूप से प्रभावित थे, वे प्रकृति की एकता को स्वीकारते थे, वे एक शुद्ध भौतिकवादी विद्वान रहें, हम्बोल्ट के कार्यों का भौगोलिक चिन्तन के विकास पर प्रभाव कई दशकों बाद दिखाई दिया, पेशेल के अनुसार हम्बोल्ट ने ही प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन की नींव रखी, वे स्थानों का भ्रमण तथा अध्ययन कर वर्णन किए, उस समय के अन्य विद्वानों से हटकर समय सीमा से परे भविष्य की ओर सही दृष्टिपात कर उन्होंने भूगोल को एक नई दिशा दी, इस लिए, हम्बोल्ट को "Father of Modern Geography" कहा जाता है।

—X—